wer is not protected at all. Taking advantage of this, the traders are forcing the growers to sell at distress prices.

This year, the traders have delayed the opening of the market. Even now, though they have formally opened, they are offering low prices. The price for a particular grade which used to sell at Rs 1000 is now Rs 500. So, the Government has to take steps immediately to protect the growers by taking their stocks with advance payment and compelling the traders to purchase the stocks at fair prices and if they refuse, their licences should be cancelled.

So many telegrams and messages have come. It is a very serious situation. I appeal to the Government to take note of it and to to the rescue of the growers immediately.

(v) Reported Refusal by sugar Mills to buy sugarcane at officially fixed rate.

श्री वसन्त साठे (अकोला) : अध्यक्ष जी, मैं इस सदन का और सरकार का ध्यान एक बहुत ही गम्भीर विषय की ओर आकर्षित करना चाहता हूं । परसों मैं यहां गाजियाबाद गया था और वहां के लोग और उस इलाके के लोग इतने चिन्तित हैं गन्ने के जो दाम एकाएक घट गये हैं । एक बहुत बड़ी मिल, सरस्वती शुगर मिल बन्द हो गई है । श्रम मन्त्री जी ध्यान दें, जो निर्धारित दाम थे 13 रु० 50 पैसे कानून से तय हुए, वह भी नहीं देते हैं । तो आप कानून में उनको कम्पैल कर सकते हैं, यहां तक कि उनकी मिल को टेक ओवर करने की भी आपके पास ताकत है । लेकिन मिल मालिक कहते हैं कि जनता सरकार तो हमारी सरकार है । हमने इनको लाखों रुपये दिये हैं यह हमारे खिलाफ क्या कार्यवाही कर सकते हैं । 13 रु० 50 पैसे दाम देने को वह तैयार नहीं है । खड़ा का खड़ा गन्ना, ईख सूख रही है । बहुत परेशान है किसान । आज बाजू के किसान जो जय जयकार मनाने के लिये, किसान दिवस मनाने के लिये 23 अक्तूबर को यहां आये थे, आज वह किसान नारा लगा रहे हैं, "अकोला नौ, गन्ना छः, और बोलेगा चरण सिंह की जय । पाती सात और गन्ना छः । जय जनता की बोलिये गन्ना मुफ्त तोलिये । इन्दिरा जी का राज था तो गन्ना बिका 18 था । इन्दिरा गांधी आयेगी, फिर वही भाव लायेगी ।" यह पर्चे में छपा है । यह चौधरी चरण सिंह के कारनामे का नोटिस होगा तो मुझे नहीं मालूम । 70 लाख टन गन्ना पैदा हुआ । अब कहा जा रहा है किसान को कि क्यों गन्ना ज्यादा पैदा किया ? भुगतो । तो ज्यादा गन्ना पैदा करना यह भी गुनाह हो गया । ज्यादा गन्ना पैदा करो तो ज्यादा शक्कर पैदा होगी और उसको विदेशों में भेज कर विदेशी मुद्रा कमा सकते हैं । तो किसान ने अच्छा किया या बुरा किया ? क्या सरकार की अक्ल का दिवाला पिट गया जो किसान को यह कहा जाय कि क्यों ज्यादा पैदा किया ? मरो । तो यह बात कुछ मेरे समझ में नहीं आ रही है । आज वह क्या कहते हैं— अच्छा भइया हमने ज्यादा किया तो सो छोड़ो, पिछले साल मिलों ने जितना लिया था 65 लाख टन, उतना तो लेंगे ।

इण्डस्ट्रीज मिनिस्टर और लेबर मिनिस्टर दोनों मिल कर इस मिल को तो कम-से-कम कब्जे में ले कि खाली पैसा ही लेंगे ? मिल ले । आप किसानों को दाम दिलाइये, नहीं तो यह किसान दिवस मनाने वाले किसान यहां आयेंगे दूसरा दिवस मनाने के लिये । सोचिये,

I hope, this Government will take note of this. Otherwise, tomorrow you must not blame me that 'you did not gring this to the notice of the Governemnt'.